''अर्हम्''

लम्बी यात्रा हेतु साधु समाज का अनुषंसा पत्र

परम श्रद्धेय, युवा मनीषी, आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों में तेरापंथ श्रमणसंघ का सादर निवेदन –

पूज्यवर!

तेरापंथ धर्मसंघ में आचार्य का मनोभाव अमोघ माना जाता है। आपने अपने मन में दूर देशाटन का संकल्प बना लिया है। सकल श्रमण संघ इसकी अन्तःकरण से अभिशंसा/अनुमोदना करता है। आप सुखे–सुखे सुदूर प्रदेशों में प्रवास करने वाले श्रावक–श्राविका समाज की सम्भाल, अहिंसक चेतना का जागरण एवं मानवीय मूल्यों का विकास तथा पूर्वाचार्यों की तरह ही संघ की श्रीवृद्धि एवं प्रभावना में श्रेयोभाग बनें। यही हमारी मंगलकामना है। हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि पूरा श्रमण समाज आपको यात्राकाल में अपनी ओर से निश्चित रखने का प्रयास करेगा। आप प्रसन्नमना धर्म का उद्योत करें। आपका स्वास्थ्य मंगलमय रहें। हम सब पर आपका अनुकम्पा भाव बरसता रहें। यही शुभकामना करते हैं।

आपका विनीत
साधु–समाज

लम्बी यात्रा हेतु साध्वी समाज का अनुषंसा पत्र

भंते!

तेरापंथ संघ गौरवशाली धर्मसंघ है। इसके यशस्वी आचार्यों के कर्त्तृत्व ने कल्याण की कई कहानियां लिखी हैं, वे आज समन्दरों पार तक बड़े चाव से पढी जा रही हैं। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें संघ–सूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अपने कर्तृतव की किरणों से युग को रोशनी बांटे और धरती के कण–कण को आध्यात्मिक आलोक से आलोकित करें, आज यह अपेक्षा है।

प्रभो! आपका विनीत साध्वी समाज युग की इस आवाज को दिल और दिमाग से स्वीकार करता है। श्रीचरणों में श्रद्धा–समर्पण के साथ विनम्र निवेदन करता है –

आपके मुलायम तलवे फौलादी संकल्प के साथ क्षेत्रीय विस्तार के नए कीर्तिमान स्थापित करें। बंगाल–बिहार के साथ आसाम, भूटान, सिक्किम और नेपाल की धरती पर आप नैतिकता का शंखनाद करें। आपका साध्वी–समाज ऐतिहासिक यात्रा की सफलता की मंगलकामना करता है।

प्रभो! आप चिरायु हो : आप दीर्घायु हों।।

आपका विनीत
साध्वी–समाज

सकल संघ ने दी लिखित अनुमति
आचार्य महाश्रमण करेंगे दूर देष की यात्राएं

राजलदेसर, 13 फरवरी। आचार्य महाश्रमण अब पूर्वांचल, दक्षिणांचल आदि सुदूर क्षेत्रों की यात्राओं पर विचार करेंगे। सकल संघ ने आचार्य प्रवर को लम्बी यात्रा करने का लिखित अनुशंसा पत्र दिया है। पिछले दिनों ही आचार्य महाश्रमण ने संघ से यात्रा की अनुमति मांगी थी। जिस पर संघ ने आचार्य प्रवर को खूब लम्बी यात्रा करने एवं धर्मसंघ की विजय पताका को फहराने की लिखित में अनुशंसा की है। यह पत्र साधु–साध्वियों की वृहद् गोष्ठी में आचार्य प्रवर को सौंपा गया। इस अनुशंसा के साथ ही अब आचार्य महाश्रमण दूर–दराज के क्षेत्रों में प्रवास करने वाले श्रावकों की अर्ज पर गौर करेंगे।

आचार्यप्रवर का इस ओर एक इंगित 147वें मर्यादा महोत्सव पर राजलदेसर में देखने को मिला। जब कोलकातावासियों की 2015 का चातुर्मास कोलकाता में कराने की अर्ज हुई तो आचार्य प्रवर ने कहा – 2014 का चातुर्मास दिल्ली में है। इस बीच में काफी लम्बा समय पड़ा है। पूर्व में कहे गये 'अगर' शब्द को हटाते हुए उन्होंने कहा – इसके पश्चात् जब भी स्वास्थ्य और समय की अनुकूलता रही तो पूर्वांचल परसने का भाव है जिसमें बंगाल, बिहार, नेपाल, आसाम और उत्तरप्रदेश शामिल हैं।

आचार्यप्रवर लम्बीयात्राएं करें, इसके पीछे कई कारण दृष्टिगोचर हो रहे हैं –

- सुदूर प्रान्तों में रहने वाले लोगों को वहाँ आचार्यों के दर्शन लाभ हुए बहुत लम्बा समय बीत गया और कुछ क्षेत्र तो ऐसे हैं जो आचार्यों की चरण रज से वंचित भी हैं। नयी पीढी जो आधुनिकता की चकाचौंध और व्यावसायिक गतिविधियों में उलझे होने के कारण अपनी जन्मभूमि की तरफ अब कम आ रही है। एक तरीके से उनका जन्मभूमिसे कटाव सा हो गया है। अतः उनमें संस्कारों का बीजारोपण, जन्मभूमि के प्रति लगाव बढाने एवं धर्म व साधना से उनके जुड़ाव हेतु आपश्री की यात्रा काफी महत्वपूर्ण साबित होगी।

- जैन तेरापंथ समाज आज थळी, मारवाड़, मेवाड़ या राजस्थान में ही नहीं रहते बल्कि आज पूरे भारत और विश्व में यह समाज निवास करता है, इसकी साख है। इस पूरे समाज को गुरुदेव द्वारा संभालना बहुत जरुरी है।

- सम्पूर्ण विश्व में आज भय, भूख, भ्रष्टाचार, हिंसा, माओवाद आतंकवाद की काली छाया व्याप्त है। गलत रास्ता क्यों पकड़ा जाता है इसके पीछे कारण है मजबूरी और दूसरा कारण है सद्मार्ग दिखाने वाले महापुरुषों का योग नहीं मिलना। पूरे विश्व को आपसे एक आशा की सुनहरी किरण दिखाई दे रही है। आपश्री जैसे वीतरागी महापुरुष, पुरुषार्थ के धनी, युवा संत जब प्रेरणा प्रदान करेंगे तो निश्चित है व्यक्ति सद्मार्ग की ओर प्रवृत होगा। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यात्रा होना निश्चय ही आशाप्रद कही जा सकती है।

- राजनेताओं से लेकर विद्यार्थियों तक सभी तबके के लोग जहाँ संगठन के स्थान पर विघटन में ही अपनी शक्ति लगा रहे हों और जहाँ जन–धन की सुरक्षा आशंकाओं के घेरे में पड़ी हों, मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा हो, ऐसी स्थिति मे आपश्री की उपस्थिति निश्चित ही एक क्रांतिकारी परिवर्तन लायेगी।

- वर्तमान विज्ञान का युग है, लेकिन जैसा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा था कि विज्ञान के साथ अध्यात्म जुड़ जाएं तो दोनों के योग से मानव जीवन की हर समस्या का समाधान है। आपश्री के द्वारा इस योग को निश्चित सफलता मिल सकती है।

यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी देशाटन आपके प्रिय कार्यों में एक है। क्योंकि आप इसे परोपकार का सशक्त साधन मानते हैं। आपकी गणना उन महान् धर्मनायकों और सन्तों में है, जो केवल धर्मोपदेश देने में ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री नहीं करते अपितु जन कल्याण की भावना से ओत–प्रोत होकर स्वयं को जनसेवा की साधना में समर्पित कर देते हैं। अब तक राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश एवं दिल्ली की भूमि आपके चरण स्पर्श से पावन बनी है। अनेक अवशिष्ट प्रान्त आतुरता के साथ प्रतीक्षारत हैं।

आप ऐसे प्रवचनकार हैं, जो अपनी शांत, मृदु और गम्भीर शैली से श्रोताओं के हृदय का स्पर्श करते हैं। आपके प्रवचन जीवन की मूलभूत और व्यक्तिगत समस्याओं से जुड़े होते हैं। जनता में इन प्रवचनों के प्रति आकर्षण सहज ही दिखाई देता है।

आप एक प्रभावी प्रवचनकार के रूप में प्रतिष्ठित है। आपके वक्तव्यों में साधना बोलती है। साधना की अग्नि में तप्त तथ्य श्रोता पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। इसलिए जहाँ बौद्धिक वर्ग आपके प्रवचन श्रवण के लिए आतुर रहता है, वहीं ग्रामीण एवं आदिवासी जनता में भी यह ललक निरन्तर बनी रहती है।

आपके प्रवचन सर्वजनहिताय होते हैं। जाति, वर्ग, क्षेत्र, सम्प्रदाय, राष्ट्र आदि किसी भी प्रकार का भेद इन प्रवचनों में परिलक्षित नहीं होता। श्रीमद्भगवद्गीता और बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद पर आपकी प्रलम्ब प्रवचन माला ने आपकी समन्वयवादिता को मुखर किया है। आपका मानना है कि ग्रन्थ, पन्थ और सन्त भिन्न–भिन्न हो सकते हैं, किन्तु उनका कथ्य और तथ्य एक ही है। यही कारण है कि हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि विभिन्न धर्मावलम्बियों ने आपके उपदेश को आदर के साथ समझा है।

निश्चित है आपकी सुदूर प्रान्तों की लम्बी यात्रा से अहिंसक चेतना के विकास, नैतिक मूल्यों का विकास, अनुकम्पा की चेतना के विकास, नशामुक्त आदर्श समाज के निर्माण में बल मिलेगा, एक नई गति आयेगी, एक नई क्रान्ति का सूत्रपात होगा।

आचार्य महाश्रमण वर्धापना समारोह

राजलदेसर, 9 फरवरी। तेरापंथ के महाकुम्भ मर्यादा महोत्सव का दूसरा दिन, श्रद्धालुओं से खचाखच भरा मर्यादा समवसरण, अपूर्व उत्साह, जयकारों की गूंज, फिजाओं में बिखरती स्वर लहरियां अपने आराध्य के प्रति वर्धापना भाव, अभिनन्दन के स्वर, हर्षित चेहरे आज के मुख्य परिदृश्य रहे। अवसर था आचार्य महाश्रमण की अभ्यर्थना का। मर्यादा महोत्सव के इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम के आज दूसरे दिन का कार्यक्रम आचार्यश्री महाश्रमण अर्भ्यथना समारोह अपने आप में अनूठा और विलक्षण था, जिसे देखने वाले अपने आप में धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

समारोह का शुभारम्भ मुनि विजयकुमार द्वारा गुरु वन्दना से हुआ। इस अवसर पर गंगाशहर के सन्तों ने सामूहिक गीतिका का सस्वर संगान करते हुए ''निराला महाश्रमण दरबार'' प्रस्तुत किया तो पूरा माहौल ओम् अर्हम् की ध्वनि से गुंजायमान हो उठा। इस अवसर पर अर्भ्यथना करने वालों की एक लम्बी सूची थी, जिसमें सभी ने गुरुदेव के गुणों की स्तुति कर उनमें पूर्ण आस्था व्यक्त करते हुए कृपा भरे आशीर्वाद की कामना की।

इस अवसर पर दो कृतियों – 'महामंत्र की परिक्रमा' –साध्वी लावण्ययशा एवं काव्यांजलि मुनि मधुकरजी की कृति का मुनि ताराचन्दजी ने विमोचन करवाया। मुनि जम्बूकुमारजी ने 'काव्यांजलि' के बारे में अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

साध्वियों की प्रभावी प्रस्तुति ने जनसमूह को मंत्रमुग्ध किया

राजलदेसर, 9 फरवरी । तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता की तपोशक्ति श्रुतशक्ति, गुरुभक्ति, आत्मशक्ति और पुण्यशक्ति का गुणगान, ग्यारह संकल्पों द्वारा अभिवन्दना। श्रद्धेया महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के प्रेरक मार्गदर्शन एवं शासनगौरव साध्वी राजीमतीजी के निर्देशन में बहिर्विहारी साध्वी समाज के नाम आयोजित 40 मिनट के इस भव्य कार्यक्रम में लगभग 250 साध्वियों ने क्रमशः ग्यारह वर्गों में ग्यारह संकल्प सूत्रों की समवेत् स्वीकृति एवं रोचक प्रस्तुति के साथ अपने आराध्य की अभिवन्दना की। साध्वी सुमनश्रीजी ने कार्यक्रम के प्रारम्भ में काव्यपाठ किया। इस सुन्दर उपक्रम की सफल समायोजना में साध्वी चन्दनबालाजी, साध्वी सोमलताजी एवं साध्वी संघप्रभाजी की सक्रिय सहभागिता रही। साध्वीवृन्द द्वारा गृहीत संकल्प सूची –

1. आगम कंठस्थ (उत्तराध्ययन आयारो,
2. सूत्र वाचन (ग्यारह)
3. प्रतिदिन ग्यारह सौ गाथाओं की स्वाध्याय
4. ग्यारह थोकड़े मुखस्थ
5. संस्कृत भाषा का अध्ययन
6. गुरुधारणा (ग्यारहसौ)
7. बारहव्रती श्रावक (ग्यारहसौ)
8. दसवैकालिकसूत्र एवं प्रतिक्रमण सार्थ कण्ठस्थ
9. विशिष्ट तप
10. सेवा चाकरी
11. योगसाधना

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य रूप पंचाचार के सन्दर्भ में प्रस्तुत इस कार्यक्रम की रचनात्मकता, प्रयोगात्मक तथा श्रुतात्मक अभिव्यंजना में साध्वी यशोधरजी ने अभिनन्दनपत्र वाचन किया। शासनश्री साध्वी रामकुमारीजी ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया। साध्वी कमलश्रीजी, साध्वी संघमित्राजी, साध्वी राजकुमारीजी (नोहर) तथा साध्वी राजीमती द्वारा क्रमशः संकल्प डायरी, उपकरण, रजोहरण तथा माल्यार्पण किया गया। साध्वीवृन्द द्वारा विविध आयामों में संयोजित इस सम्पूर्ण कार्यक्रम की प्रभावी प्रस्तुति ने उपस्थित जनसमूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। साध्वी वर्धमानश्रीजी, साध्वी संचितयशाजी, साध्वी प्रज्ञावतीजी आदि अनेक साध्वियों का प्रयास श्लाघनीय रहा। साध्वियों द्वारा प्रदान की गयी माला को दीक्षा प्रदाता मुनिश्री सुमेरमल ने आचार्यप्रवर को पहनाई।

अभ्यर्थना में बोलने वालों की रही लम्बी सूची

मर्यादा महोत्सव के दूसरे दिन आचार्य महाश्रमण अभ्यर्थना समारोह में अभ्यर्थना करने वालो की लम्बी सूची रही। संचालक मुनि मोहजीतकुमार सबको कम समय में अपनी भावना रखने का बार–बार आग्रह करते रहे, वक्ता अपने उल्लास को रोक नहीं पा रहे थे फिर भी समय की मर्यादा का पालन करते हुए 31 वक्ताओं ने अपने भावों को प्रस्तुत किया। मुनि देवेन्द्र कुमार, मुनि दर्शनकुमार, मुनि धन्यकुमार, मुनि उदितकुमार, मुनि अभयकुमार, मुनि रविन्द्रकुमार, मुनि मुकुलकुमार, मुनि पद्मकुमार, मुनि दिनकर, मुनि पृथ्वीराज, मुनि नरेशकुमार, मुनि अनन्तकुमार, साध्वी अणिमाश्री, साध्वी मंगलप्रज्ञा, साध्वी मधुस्मिता, समणी कुसुमप्रज्ञा,

समणीवृन्द (सामूहिक) डॉ. शान्ता जैन, मुनिगण, साध्वी समुदाय सहित आचार्यश्री महाश्रमण मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष पन्नालाल बैद, पूर्वोत्तर क्षेत्र से विजयसिंह डागा, कमल दुगड़, नेपाल बिहार सभा के अध्यक्ष हंसराज बेताला एवं चूरू जिला एडीएम बी.एल मेहरड़ा आदि ने आचार्य महाश्रमण की अभ्यर्थना की।

कोलकाता में चातुर्मास की अर्ज

कोलकाता से समागत विशाल संघ ने आचार्य महाश्रमण को 2015 में चातुर्मास करने की अर्ज प्रस्तुत की। जुलूस के साथ पहुँचे संघ ने 'कोलकाता की यह अभिलाष सन् 2015 का चातुर्मास' आदि नारों से जहाँ वातावरण को जोशीला कर दिया। वहीं बालहठ की तरह आचार्य महाश्रमण के सम्मुख झोली फैलाकर श्रद्धालुओं ने भावपूर्ण अर्ज की। संकल्प यात्रा के युवाओं ने गीत को स्वर देकर अपनी भावनाएं रखी। कमल दुगड़ ने शांति स्थापना के लिए भारतयात्रा करने एवं उसकी शुरुआत कोलकाता से करने की अर्ज की। पूर्वोत्तर से विजयसिंह डागा ने तथा नेपाल–बिहार के अध्यक्ष हंसराज बेताला ने भी अपनी भावनाएं प्रकट की और गुरुवर से पूर्वोत्तर पधारने की अर्ज की।

147वें मर्यादा महोत्सव पर उपस्थित विशाल धर्मसेना

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित 147वें मर्यादा महोत्सव पर विशाल धर्मसेना की उपस्थिति रही। राजलदेसर के हर भाग, हर मोहल्ले में संयम के श्वेतवस्त्रधारी साधक अहिंसा की अलख जगाते हुए दृष्टिगोचर हो रहे थे।

147वें मर्यादा महोत्सव में तेरापंथ धर्मसंघ के 91 सन्त, 301 साध्वियां, एक समण और 96 समणियां मौजूद रहे। इतनी विशाल धर्मवाहिनी की मौजूदगी अपने आप में एक अद्भुत नजारा था और यह नजारा तब और अद्भुत बना जब बड़ी हाजरी वाचन के समय दीक्षा पर्याय के आधार पर पंक्तिबद्ध खड़े होकर धवलवाहिनी ने पण्डाल को घेर लिया।

महोत्सव के लिए साधु–साध्वियों एवं समण–समणियों ने विशेष तैयारियों के साथ प्रस्तुतियां दी। सम्पूर्ण संघ की दृष्टि से आचार्य प्रवर, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी, मुख्य नियोजिका विश्रुतविभाजी अपना श्रम नियोजित कर रहे थे।

महोत्सव के प्रथम दिन आचार्य महाश्रमण ने मर्यादा पत्र की स्थापना के बाद वृद्ध साधु–साध्वियों के सेवाकेन्द्रों हेतु एक वर्ष के लिए नियुक्तियां की। दूसरे दिन आचार्य महाश्रमण अभ्यर्थना समारोह आयोजित हुआ, जिसमें साधु–साध्वी वृन्द, समण–समणीवृन्द ने रोचक प्रस्तुतियों के साथ अपने आराध्य आचार्य की अभ्यर्थना की।

गुरु इंगितानुसार अपना जीवन बनाएं – मुनि सुमेरमल

राजलदेसर, 10 फरवरीं। तेरापंथ एक तेजोमय धर्मसंघ है। इसमें एक गुरु का विधान है। हम एक गुरु और एक धर्म को मानने वाले हैं, यह सबसे बड़ा सम्बन्ध है। हमारा भाग्य बड़ा पुण्यवान् है कि इस युग में हमें महान् धर्मसंघ की छत्रछाया मिल रही है, ऐसे पुण्यवान् आचार्य मिल रहे हैं। हम चतुर्विध धर्मसंघ आचार्यों के इंगित की आराधना करें। उनके इंगितानुसार अपना जीवन बनायें। उक्त उद्गार मुनि सुमेरमलजी (लाडनूं) ने रात्रिकालीन कार्यक्रम में व्यक्त किए।

उन्होंने कहा – यह धर्म संघ हमें मिला है। हम योगभूत बनें। इस भिक्षु शासन के नन्दनवन में एक पौधा हम जरुर लगाएं। हर कोई अपनी क्षमता का उपयोग करें। हर एक को आगे बढने का मौका मिले। धर्मसंघ की गरिमा को बढाकर अपने आप को कृत–कृत करें।